3002

B.A. (Part-III) Examination, 2022

हिंदी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र

कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)

Duration of Examination : 90 minutes max marks : 50

परीक्षा की अवधि : 90 मिनट पूर्णांक : 50

instruction of the candidates:

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:-

परीक्षार्थीगण सम्पूर्ण प्रश्नपत्रों में से 50 प्रतिशत अंक के प्रश्नों के उत्तर देवें। परीक्षार्थी द्वारा

किन्हीं कारणों से 50 प्रतिशत अंकों से ज्यादा उत्तर देने की स्थिति में परीक्षक द्वारा उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन 50 प्रतिशत अंकों से ही किया जायेगा।

कोई पांच प्रश्न हल करने हैं, प्रत्येक प्रश्न के अंक समान है।

1. निमिन्लिखित गधांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(क) कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गन्ध आ रही थि पर वह उसे अपनी गोद से चिपटाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनो से उसे न मिला था जवरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहाँ है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गंले लगाता । वह अपनी दीनता से आहत न था जिसने आज उसे इस दशा तक पहुँचा दिया । नहीं इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणुप्रकाश से चमक रहा था ।

https://universitynews.in

अथवा

मनुष्य का ह्रदय बड़ा ममत्व प्रेमी है । कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुन्दर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता । किन्तु भद्दी से भद्दी और कम न आने वाले वस्तु को भी यदि मनुष्य अपनी समझता है तो उससे प्रेम करता है । पराई वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, कितना ही उपयोगी क्यों ना हो, कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुःख का अनुभव नहीं करता, इसलिए की वह वस्तु उसकी नहीं पराई है । अपनी वस्तु कितनी भी भद्दी हो, काम में न आने वाली हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य को दुःख होता है इसलिए की वह अपनी चीज है ।

(ख) इस दुनिया के हर कोने पर मर्द खड़ा मिलेगा, कभी प्रेमी के रूप में तो कभी बलात्कारी के रूप में। मगर जो पति ढूँढने निकलो तो एक भी कायदे का आदमी नज़र नहीं आएगा, जिसके साथ उम्र एक छत के निचे गुजार दी जाये । मैं तो यूँ ही भली न कोई मेरा ठौर ठिकाना न मैं किसी घर की मालकिन । दुनिया की आबादी हूँ और हालात की शहजादी हूँ । इन मर्दों को अब कों समझाए ।

अथवा

तमाम सड़कें है, जिन पर वह जा सकता है....लेकिन वे सड़के कहीं नहीं पहुंचती है। इन सड़कों के किनारे पर है, बस्तियाँ हैं, पर किसी भी घर में यह नहीं जा सकता। उन घरों के बाहर फाटके है, जिन पर कुत्तो से सावधान रहने की चेतावनी है, फूल तोड़ने की मनाही है और घण्टी बजाकर इन्तजार करने की मजबूरी है।

(ग) नारी चाहे कितनी ही कम उम्र की हों, पुरुषों को समझने में दक्ष होती हैं। अपनी प्रकृति प्रदत्त की शक्ति के बल पर वे पुरूष की नस-नस पहचान जाती हैं। एक पुरूष के साथ रहता उसका साथी जो काम वर्षों में नहीं कर पाता, एक स्त्री चन्द दिनों में ही कर लेती है। इसीलिए तो सेवा का काम स्त्रियों के जिम्मे ही दिया जाता है। शालिनी और दद्दाजी में दुगुनी उम्र का फासला था। फिर भी कभी-कभी दद्दाजी शालिनी को बड़े निरीह, भोले-भाले दिखते थे।

अथवा

सोना का दिल उस रात से चहार दीवारी की चाहत से मुक्त हो गया। उसके अन्दर एक नफरत का ख्याल हर दीवार को गिरा गया। उसने मिट्टी के ढेर पर बैठे-बैठे सामने कतार में खड़े पक्के ऊँचे मकानों-कोठियों को देखा। फिर वहीं ढेर पर लेट गयी। ऊपर आसमान पर तारे छिटक रहे थे। उन्हें देखा सोना का दिल हल्का हुआ और अन्दर से एक फूटी। उसकी चौकन्नी आँखें पहले से ज्यादा चमकदार हो उठी।

2. कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

"एक गौ" कहानी में गाय की मुखरित वाणी वर्तमान युग की यांत्रिक सभ्यता की निर्ममता, अर्थ प्रमुखता और कठोरता पर तीखा व्यंग्य है।" 'एक गौ' से उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिये।

3. "जयशंकर प्रसाद को 'पुरस्कार' कहानी में लेखक ने प्रेम और कर्तव्य का आन्तरिक संघर्ष दिखा कर बड़े कौशल से उन दोनों की रक्षा की है।" इस कथन की सत्यता उक्त कहानी से उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिये।

अथवा

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट करते हुए बताइये कि इसमें महानगरीय जीवन की स्थितियों का चित्रण करने में कहानीकार कहाँ तक सफल रहा है?

4. 'ज्यो मेंहदी को रंग' उपन्यास में दद्दाजी का आदर्श चरित्र मानवीय व्यक्तित्व से असाधारण दिखाई देता है। इस कथन के आलोक में दद्दाजी का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'ज्यों मेंहदी को रंग उपन्यास को सोदाहरण समीक्षा कीजिये।

5. हिन्दी उपन्यास साहित्य के उद्भव और विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये।

https://universitynews.in

अथवा

कहानी के प्रमुख तत्वों का उल्लेख करते हुए सिद्ध कीजिये कि तात्विक दृष्टि से उपन्यास एवं कहानी पूर्णत: भिन्न विधाएँ हैं।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये :

(i) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी

(ii) कहानी की प्रमुख शैलियाँ

(iii) कथाकार मुंशी प्रेमचंद

(iv) हिन्दी के प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार

(v) जयशंकर प्रसाद की कहानी कला

https://universitynews.in